नैतिकता वह है जो तब भी बनी रहे जब कोई इसे देख नहीं रहा हो

नैतिकता (Ethics) एक व्यक्ति या समाज द्वारा स्वीकार किये गए उन मूल्यों और सिद्धांतों का समूह है, जो सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करता है। यह केवल बाहरी नियमों या कानूनों तक सीमित नहीं होती, बल्कि व्यक्ति के अंतःकरण से जुड़ी होती है। नैतिक व्यक्ति न केवल सामाजिक मानकों का पालन करता है, बल्कि अपने आचरण में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और न्याय को प्राथमिकता देता है। कई बार लोग नैतिक आचरण इसलिये अपनाते हैं क्योंकि उन्हें दंड का भय होता है या समाज की प्रतिक्रिया की चिंता होती है। इसे बाह्य नियंत्रण कहा जा सकता है। लेकिन वास्तविक नैतिकता वह होती है, जिसे व्यक्ति बिना किसी दबाव के अपनाए यानी आत्मनियंत्रण से प्रेरित नैतिकता। जब कोई व्यक्ति बिना किसी बाहरी निगरानी के भी सही कार्य करता है तो यही सच्ची नैतिकता होती है।

नैतिकता और चरित्र एक-दूसरे के पूरक हैं। नैतिकता जहाँ सही एवं गलत का बोध कराती है, वहीं चरित्र यह सुनिश्चित करता है कि व्यक्ति अपने नैतिक मूल्यों पर अडिग रहे। नैतिकता और चरित्र संयुक्त होकर व्यक्तित्व को परिभाषित करते हैं।

'नैतिकता वह है जो तब भी बनी रहे जब कोई इसे देख नहीं रहा हो'—यह कथन स्पष्ट करता है कि वास्तविक नैतिकता वह है, जो किसी बाहरी नियंत्रण के बिना भी बरकरार रहे। यह सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि समाज, राजनीति और व्यवसाय में भी समान रूप से लागू होता है।

नैतिकता का वास्तविक अर्थ

- **नैतिकता और कानून में अंतर:** नैतिकता और कानून दोनों समाज में शांति एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिये आवश्यक हैं, लेकिन दोनों में मूलभूत अंतर है।
    - नैतिकता (Ethics) व्यक्ति के अंतःकरण से उपजती है और इसमें बाह्य बल की आवश्यकता नहीं होती।
    - कानून (Law) राज्य या शासन द्वारा बनाए गए नियम होते हैं, जिनका पालन करना अनिवार्य होता है।
- **नैतिकता का व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर प्रभाव**
    - **व्यक्तिगत स्तर:** नैतिकता व्यक्ति को आत्म-सम्मान और आंतरिक शांति प्रदान करती है। एक ईमानदार और नैतिक व्यक्ति हमेशा संतोष का अनुभव करता है।
    - **सामाजिक स्तर:** नैतिक आचरण से समाज में विश्वास, सहयोग और सौहार्द बना रहता है। यदि सभी लोग नैतिकता का पालन करें तो समाज में भ्रष्टाचार, अपराध और अन्य नकारात्मक प्रवृत्तियाँ कम होंगी।
- **ऐतिहासिक और दार्शनिक दृष्टिकोण:** नैतिकता के महत्त्व को विभिन्न दार्शनिकों और महापुरुषों ने समय-समय पर समझाया है।
    - **सुकरात:** उन्होंने तर्क एवं नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दिया और कहा कि व्यक्ति को सत्य एवं न्याय के मार्ग पर ही चलना चाहिये।
    - **महात्मा गांधी:** उन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को अपनाकर नैतिकता का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत किया।
    - **इमैनुएल कांट**: उन्होंने कर्त्तव्य-आधारित नैतिकता (Deontological Ethics) का समर्थन किया, जिसमें नैतिकता को किसी लाभ या हानि से नहीं, बल्कि आंतरिक कर्त्तव्य से जोड़ा गया।
    - **स्वामी विवेकानंद:** उन्होंने कहा कि नैतिकता केवल पुस्तकों में प्रस्तुत आदर्श नहीं हो, बल्कि इसे अपने जीवन में लागू करना चाहिये।
- **नैतिकता का आंतरिक स्वभाव और आत्मानुशासन का महत्त्व:** सच्ची नैतिकता बाह्य दबाव से नहीं, बल्कि आत्म-नियंत्रण से आती है।
    - **आंतरिक स्वभाव:** नैतिकता को आदत में बदलने के लिये व्यक्ति को स्वयं से ईमानदार रहना होगा।
    - **आत्मानुशासन:** नैतिकता का पालन तभी संभव है जब व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण रखे और अपने कार्यों के प्रति जवाबदेह बने।

नैतिकता और सामाजिक व्यवहार

- **समाज में नैतिकता की भूमिका**
    - नैतिकता किसी भी समाज की नींव होती है। यह एक सामाजिक तंत्र को सुचारु रूप से चलाने में मदद करती है, क्योंकि जब लोग नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं तो आपसी विश्वास, सद्भाव और सहयोग बना रहता है।
- **नैतिकता और मानवीय मूल्यों का संबंध:** नैतिकता केवल सही और गलत का निर्णय लेने की क्षमता भर नहीं है, बल्कि यह मानवीय मूल्यों से गहनता के साथ संबद्ध होती है।
    - **ईमानदारी (Honesty):** सत्य बोलना और अपने कार्यों में पारदर्शिता रखना नैतिकता का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।
    - **करुणा (Compassion):** दूसरों की भावनाओं को समझना और उनके प्रति दयालुता दिखाना भी नैतिक आचरण का हिस्सा है।
    - **सत्यता (Truthfulness):** सत्य को स्वीकार करना और झूठ से बचना नैतिक व्यवहार को परिभाषित करता है।
- **नैतिकता और नेतृत्व: एक आदर्श नेता की विशेषताएँ:** एक सच्चा और नैतिक नेता वही होता है, जो निःस्वार्थ रूप से समाज की सेवा करता है।

महात्मा गांधी और अब्राहम लिंकन जैसे नेताओं ने नैतिकता के उच्च मानकों को अपनाकर समाज में बदलाव को प्रेरित किया। एक आदर्श नेता की कुछ विशेषताएँ होती हैं:

- ईमानदारी और पारदर्शिता
- निर्णय लेने में निष्पक्षता
- जनता की भलाई के लिये कार्य करने की भावना
- स्वार्थ और भ्रष्टाचार से दूर रहना

- **सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता का महत्त्व:** नैतिकता का प्रभाव केवल व्यक्ति के निजी जीवन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह सार्वजनिक जीवन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
  - **सार्वजनिक जीवन:** राजनीति, प्रशासन और व्यवसाय में नैतिकता का पालन करने से समाज में पारदर्शिता एवं विश्वास बना रहता है।
  - **व्यक्तिगत जीवन:** व्यक्ति का नैतिक आचरण उसकी प्रतिष्ठा और आत्म-संतोष को प्रभावित करता है।
- **सामाजिक संबंधों में नैतिक आचरण:** नैतिकता हमारे सामाजिक संबंधों को भी प्रभावित करती है:
  - **मित्रता:** सच्चे मित्र हमेशा एक-दूसरे के प्रति ईमानदार और सहायक बने रहते हैं।
  - **परिवार:** नैतिकता परिवार में प्रेम, सम्मान और पारस्परिक सहयोग को बनाए रखने में सहायक सिद्ध होती है।
  - **कार्यस्थल:** कार्यस्थल पर नैतिकता के अनुपालन से कार्यकुशलता आती है और अच्छे कार्य-वातावरण का निर्माण होता है।
  - **व्यवसाय:** ईमानदार और नैतिक व्यापार नीति अपनाने से ग्राहकों का विश्वास बढ़ता है।

नैतिकता का परीक्षण: जब कोई देख न रहा हो

- **नैतिकता की पहचान तब होती है जब व्यक्ति अकेला होता है**
  - असली नैतिकता तब प्रकट होती है जब व्यक्ति अकेला होता है और उसे किसी बाहरी दबाव का सामना नहीं करना पड़ता। उदाहरण के लिये, यदि कोई व्यक्ति बिना किसी निगरानी के भी अपने कार्यों में ईमानदारी बनाए रखता है तो यह उसकी वास्तविक नैतिकता को दर्शाता है।
- **नैतिकता और प्रलोभन के बीच संघर्ष:** जीवन में ऐसे क्षण आते रहते हैं जब व्यक्ति के समक्ष अनैतिक कार्य करने के प्रलोभन होते हैं। ये प्रलोभन धन, शक्ति, पदोन्नति या व्यक्तिगत लाभ के रूप में हो सकते हैं।
  - **व्यवसाय में:** यदि कोई व्यापारी अपने ग्राहकों को ठगने की योजना बनाता है, लेकिन नैतिकता के कारण ऐसा नहीं करता तो यह उसकी सच्ची नैतिकता को दर्शाता है।
  - **राजनीति में:** यदि कोई नेता वोट पाने के लिये अनैतिक हथकंडे अपनाने से बचता है तो वह एक नैतिक नेता कहलाएगा।
- **नैतिकता और आत्म-संतोष: क्या हम अपनी नज़रों में सही हैं?**
  - एक व्यक्ति के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह होती है कि वह अपनी आत्मा के प्रति ईमानदार बना रहे। यदि कोई व्यक्ति बाहरी दुनिया को दिखाने के लिये नैतिक आचरण करता है, लेकिन अपने निजी जीवन में अनैतिक तरीकों को अपनाता है तो वह वास्तव में नैतिक नहीं है।
- **विभिन्न जीवन स्थितियों में नैतिकता की परीक्षा:** नैतिकता का मूल्यांकन अलग-अलग परिस्थितियों में किया जा सकता है:
  - **व्यवसाय:** भ्रष्टाचार से बचकर निष्पक्ष और पारदर्शी व्यापार करना।
  - **राजनीति:** वोट पाने के लिये झूठे वादे न करना और जनता की सेवा को प्राथमिकता देना।
  - **शिक्षा:** परीक्षा में नकल न करना और मेहनत से सफलता प्राप्त करना।
  - **व्यक्तिगत जीवन:** व्यक्तिगत लाभ के लिये दूसरों को धोखा न देना।

नैतिकता और आधुनिक समाज

आधुनिक समाज तेज़ी से बदल रहा है और इसके साथ ही नैतिकता के मानक भी प्रभावित हो रहे हैं। तकनीकी प्रगति, उपभोक्तावाद और डिजिटल क्रांति ने नैतिकता से जुड़े कई नए प्रश्न उठाए हैं:

- **उपभोक्तावाद और नैतिकता का संघर्ष:** आज का समाज उपभोक्तावादी (Consumerist) बन चुका है, जहाँ लोग आवश्यकता से अधिक चीज़ें खरीदने और भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे भाग रहे हैं। कंपनियाँ मुनाफे के लिये अनैतिक तरीकों (भ्रामक विज्ञापन, गैर-ज़िम्मेदार उत्पादन, श्रमिक शोषण) का उपयोग कर रही हैं।
  - नैतिक व्यापार का अर्थ है कि कंपनियाँ अपने ग्राहकों, पर्यावरण और कर्मचारियों के प्रति ज़िम्मेदार रहें।
  - उपभोक्ताओं को भी नैतिक खरीदारी की ओर ध्यान देना चाहिये, जैसे कि पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों को प्राथमिकता देना।
- **सोशल मीडिया और नैतिकता:** सोशल मीडिया ने संवाद को आसान बनाया, लेकिन नैतिकता को कई नई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है:
  - **फेक न्यूज़:** बिना सत्यापन के भ्रामक खबरों का प्रसार समाज में तनाव उत्पन्न कर सकता है।
  - **गोपनीयता:** लोगों की व्यक्तिगत सूचना का दुरुपयोग एक गंभीर नैतिक समस्या बन गई है।
  - **साइबर क्राइम:** इंटरनेट पर धोखाधड़ी, ट्रोलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न नैतिकता की सीमाओं को चुनौती दे रहे हैं।
- **नैतिकता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI):** कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग कई क्षेत्रों में हो रहा है, लेकिन इसके नैतिक पहलुओं पर चर्चा आवश्यक है:
  - AI का उपयोग सही उद्देश्यों के लिये होना चाहिये, न कि गलत सूचनाओं के प्रसार या निजी डेटा की चोरी के लिये।
  - AI को ऐसे नैतिक मानकों पर विकसित करना चाहिये जो मानवीय मूल्यों के अनुरूप हों।
  - स्वायत्त (Autonomous) हथियारों और स्वचालित निर्णय लेने वाली प्रणालियों में नैतिक चिंताओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।
- **व्यावसायिक नैतिकता:** कॉर्पोरेट सेक्टर में नैतिकता का पालन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
  - **कॉर्पोरेट गवर्नेंस:** कंपनियों को पारदर्शी और ईमानदार नीतियों का पालन करना चाहिये।
  - **भ्रष्टाचार:** रिश्वतखोरी और अनैतिक व्यावसायिक अभ्यास समाज में असमानता एवं अन्याय को जन्म देते हैं।
- **व्यक्तिगत स्वतंत्रता बनाम नैतिक ज़िम्मेदारी:** व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता का उपयोग नैतिक सीमाओं के भीतर करना चाहिये।

- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाई जाए।
- व्यक्तिगत अधिकारों और समाज की भलाई के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

नैतिकता की शिक्षा और जागरूकता

- **नैतिकता को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने का महत्त्व:** आज के प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित रह गई है। लेकिन नैतिक मूल्यों के बिना शिक्षा अधूरी होती है।
  - नैतिकता केवल सिखाई जाने वाली चीज़ नहीं है, बल्कि यह जीवन का एक व्यावहारिक हिस्सा होनी चाहिये। नैतिक शिक्षा और जागरूकता समाज को अधिक सभ्य एवं अनुशासित बनाने में सहायक होती हैं।
  - स्कूलों और कॉलेजों में नैतिक शिक्षा (Ethical Education) को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिये।
  - विद्यार्थियों को नैतिक दुविधाओं को हल करने की क्षमता विकसित करनी चाहिये।
  - नैतिकता से जुड़े ऐतिहासिक और समकालीन उदाहरणों को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाना चाहिये।
  - **बचपन में नैतिकता की नींव कैसे रखी जाए?**
- बचपन में सीखे गए मूल्य व्यक्ति के पूरे जीवन को प्रभावित करते हैं।
  - बच्चों को सच्चाई, ईमानदारी और समानुभूति का महत्त्व समझाना चाहिये।
  - नैतिक कहानियाँ और प्रेरक व्यक्तित्वों के उदाहरण देकर बच्चों में नैतिक सोच विकसित की जा सकती है।
  - बच्चों को सही-गलत का निर्णय स्वयं लेने के लिये प्रेरित करना चाहिये।
- **माता-पिता, शिक्षकों और समाज की भूमिका**
  - **माता-पिता:** बच्चों के समक्ष सही उदाहरण प्रस्तुत करें ताकि वे नैतिकता को अपने जीवन में आत्मसात् कर सकें।
  - **शिक्षक:** शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न हो, बल्कि बच्चों को नैतिक निर्णय लेने की क्षमता भी दी जाए।
  - **समाज:** समाज में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिये जागरूकता अभियानों और चर्चाओं का आयोजन किया जाना चाहिये।
- **नैतिकता विकसित करने के व्यावहारिक तरीके**
  - **आत्मविश्लेषण (Self-Reflection):** व्यक्ति को नियमित रूप से आत्म-मूल्यांकन करना चाहिये कि वह कितनी नैतिकता का पालन कर रहा है।
  - **ध्यान (Meditation):** ध्यान मानसिक शांति लाने और नैतिकता के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है।
  - **सेवा कार्य (Social Service):** निःस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करना नैतिकता को सुदृढ़ करता है।

निष्कर्ष

नैतिकता केवल बाहरी नियमों और कानूनों से नियंत्रित नहीं होती, बल्कि यह आत्म-जागरूकता और आंतरिक मूल्यों से उपजती है। यह हमारे चरित्र और व्यक्तित्व का दर्पण होती है, जो तब भी उज्ज्वल रहनी चाहिये जब कोई हमें देख नहीं रहा हो। नैतिकता का वास्तविक परीक्षण तब होता है जब हम अकेले होते हैं और हमारे निर्णयों पर किसी बाहरी दबाव का प्रभाव नहीं पड़ता।

- **नैतिकता का महत्त्व: व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर**
  - नैतिकता न केवल व्यक्ति के चरित्र को मज़बूत करती है, बल्कि समाज को भी अधिक न्यायसंगत, विश्वसनीय और सामंजस्यपूर्ण बनाती है। जब प्रत्येक व्यक्ति नैतिक मूल्यों को अपनाने के प्रति जागरूक होता है तो समाज में विश्वास, समानता और सौहार्द की भावना विकसित होती है।
  - यदि व्यक्ति सही आचरण अपनाते हैं तो समाज में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और सहिष्णुता को बढ़ावा मिलता है।
  - नैतिकता से रहित समाज में भ्रष्टाचार, गला-काट प्रतिस्पर्द्धा और अन्याय की प्रवृत्ति बढ़ती है, जिससे सामाजिक असंतुलन उत्पन्न होता है।
- **नैतिकता को अपनाने का संकल्प**
  - हमें अपने जीवन में नैतिकता को केवल आदर्श के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक सिद्धांत के रूप में अपनाना चाहिये।
  - हर परिस्थिति में सत्य और ईमानदारी का पालन करना आवश्यक है।
  - स्वार्थ और प्रलोभन से बचते हुए सही कार्य करने की आदत विकसित करनी चाहिये।
  - शिक्षा, परिवार और समाज के माध्यम से नैतिकता को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिये।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/morality-is-what-remains-even-when-no-one-is-watching